दुर्लभ पत्रों और पाण्डुलिपियों का घर

महत्वपूर्ण लेखकों की पाण्डुलिपियों को एकत्र करने का काम महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने शुरू किया है। इसके लिए विश्वविद्यालय ने एक परियोजना शुरु की है। इसके अंतर्गत जिन बातों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है वे हैं –

पांडुलिपियों को एकत्र करना। महत्वपूर्ण पुस्तकों के प्रथम संस्करण हासिल करना।हिंदी पत्रिकाओं के पहले अंक सहेजना। लेखकों के पत्र–व्यवहार एकत्र करना।लेखकों के दुर्लभ फोटो प्राप्त करना। इस परियोजना के पहले चरण में दिवंगत या वयोवृद्ध लेखकों को प्राथमिकता दी जा रही है। इसके साथ ही समकालीन लेखकों की पांडुलिपियों को भी सहेजा जा रहा है। परियोजना का मूल उद्देश्य इस विश्वविद्यालय को हिंदी साहित्य की पांडुलिपियों का सबसे बड़ा और सर्वाधिक व्यापक केंद्र बनाना है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान इस परियोजना में काफी काम भी हुआ है। निराला की कविताओं की पांडुलिपियों के अलावा **कल्पना** पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मूल पांडुलिपियों की तमाम फाइलें भी प्राप्त की गई हैं।

संकलित सामग्री में सन 1880 में प्रकाशित समाचार पत्र **'उचितवक्ता'** के साथ–साथ अन्य प्राचीन साहित्यिक सामग्री हैं– हजारी प्रसाद द्वारा लिखित **'बाण भट्ट की आत्मकथा'** का प्रथम संस्करण तथा हिंदी साहित्य की भूमिका। पांडुलिपियों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि किसी भी कृति के कौन से अंश रखे गए हैं और कौन–से छोड़ दिए गए हैं। कोई भी रचना एक बार में लिखी गई या रचनाकार ने अपने लिखे हुए में संशोधन किया? उदाहरण के रूप में मुक्तिबोध द्वारा रचित नई कविता का आत्म संघर्ष तथा अन्य निबन्ध नामक रचना में त्रिलोचन द्वारा संशोधन किया गया है। निर्मल वर्मा द्वारा रचित रचना में उनके ही द्वारा कई बार संशोधन किया गया है। यह सब जानना दिलचस्प होता है। इससे रचनाकार के सर्जन प्रक्रिया का भी पता चलता है। इसके अतिरिक्त कल्पना के लगभग सभी अंक प्रवेशांक सहित हैं। इस संग्रहालय में लगभग 150 पत्रिकाओं के प्रवेशांक तथा विविध साहित्यिक पत्रिकाएं भी संगृहीत हैं। इन सब प्रवेशांक और पत्रिकाओं के अतिरिक्त मूर्धन्य साहित्यकारों के हस्तलिखित एवं टंकित पत्र भी सम्मिलित हैं। जिन प्रमुख लेखकों के पत्र हमारे पास उपलब्ध हैं उनके नाम हैं – महापंडित राहुल सांकृत्यायन, पंत, निराला, केदारनाथ अग्रवाल, अज्ञेय, महादेवी वर्मा, अमृतलाल नागर, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क तथा नागार्जुन आदि। जिन महत्वपूर्ण लेखकों की कृतियों के पाण्डुलिपि अंश या पूर्ण पाण्डुलिपि हमारे पास हैं उनमें प्रमुख हैं– हजारी प्रसाद द्विवेदी (पुनर्नवा, अनामदास का पोथा, चारूचंद्र लेख), मुक्तिबोध (काठ का सपना), निर्मल वर्मा (परिंदे), बच्चन, त्रिलोचन, नामवर सिंह, विष्णु प्रभाकर, मार्कण्डेय, शमशेर, रघुवीर सहाय, विद्यानिवास मिश्र, विपिन कुमार अग्रवाल, राहीमासूम रजा, धूमिल तथा राजकमल चौधरी आदि। ऐसी प्रत्रिकाएँ जिनका प्रकाशन बंद हो चुका है, उन पत्रिकाओं में से **कहानी**, **साहित्यकार** और **मैनकाइंड** के अंक हमारे पास उपलब्ध हैं। संग्रहालय में कुछ विशिष्ट रचनाकारों के छाया चित्र भी हैं।

गद्यकार के रूप में पहचाने जाने वाले मनोहर श्याम जोशी की कविताओं की डायरी हस्तलिखित रूप में उपलब्ध है। महाकवि सुमित्रानंदन पंत के एक नाटक का हस्तलिखित अधूरा अंश भी प्राप्त हुआ है। गरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के अवसान पर निराला की हस्तलिखित कविता 'राखी' भी है।

स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय की वेबसाइट www.archive.hindivishwa.org भी बनायी गई है। इसमें हर हफ्ते नई उपलब्ध सामग्री की जानकारी दी जाती है। इसका लोकार्पण नामवर सिंह की उपस्थिति में उपन्यासकार एवं नाटककार सुरेन्द्र वर्मा ने किया था।

हिंदी विश्वविद्यालय में स्थापित हुआ स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय

वर्धा, 30 दिसंबर : प्रसिद्ध साहित्यकार और विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह ने स्वमी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय का उद्घाटन किया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में स्थित इस संग्रहालय में हिंदी के जाने माने लेखकों की पांडुलिपियां रखी गई हैं। यहां साहित्य प्रेमी निराला, पंत, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, रघुवीर सहाय तथा धूमिल की प्रसिद्ध कविताओं के प्रथम प्रारूप का अवलोकन कर सकते हैं। आलोचना, कल्पना, वर्तमान साहित्य, वाम तथा हंस जैसी पत्रिकाओं का प्रथम अंक देख सकते हैं।

प्रो. नामवर सिंह ने पहले स्वामी सहजानंद सरस्वती की मूर्ति पर फूल अर्पित किए उसके बाद अपने व्याख्यान में इस संग्रहालय की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। नामवर जी ने कहा कि कुलपति विभूति नारायण राय ने स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय स्थापित करके ऐतिहासिक कार्य किया है। इन पांडुलिपियों के अध्ययन से लेखको के व्यक्तित्व के अनेक अज्ञात पहलू सामने आएंगे। पुराने लेखकों की पांडुलिपियों के संकलन के साथ ही नए लेखकों की पांडुलिपियां भी संकलित की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि पांडुलिपियों के आधार पर सम्बद्ध रचनाकारों का विवेचन विश्लेषण आलोचना का एक नया रूप सामने लाएगा। उन्होंने कहा कि संग्रहालय योजना बना कर हिंदी लेखकों की पांडुलिपियों का संकलन करे यह बेहद जरूरी है। इस संग्रहालय में पत्रकारों की पांडुलिपियां भी रखे जाने की व्यवस्था करनी चाहिए।

विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि इन पांडुलिपियों के अध्ययन से नए तथ्य सामने आएंगे। हमारे पास सुमित्रानंदन पंत लिखित ग्राम्या की भूमिका है। उस भूमिका के एक अंश को पंत जी ने काट दिया है। उसमें लिखा हैं कि हमें चरखा की उपयोगिता समझनी चाहिए लेकिन उसके आदर्शवाद को हमे समूल नष्ट कर देना है। यह पंक्ति पंत जी ने किन दबावों में काटी होगी, उसकी खोज की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि संग्रहालय के माध्यम से हम शोध को नई दिशा मिलेगी। मानव शास्त्र से जुड़ी सामग्री का संकलन भी जरूरी है।

विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति ए. अरविंदाक्षण ने कहा कि इस संग्रहालय में समाज चिंतकों की पांडुलिपियां भी होनी चाहिए।

संग्रहालय के प्रभारी और विश्वविद्यालय के अतिथि लेखक सुरेश शर्मा जी ने कहा कि वे इन पांडुलिपियों का पोर्टल बना कर तथा इन्हें डिजिटाइज्ड कर के इन्हें सैकडों साल तक सुरक्षित रखने की व्यवस्था करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि इन पांडुलिपियों के आधार पर रचना कारों का मूल्यांकन आलोचना का एक नया रूप सामने आएगा। उन्होंने सुझाव दिया कि संग्रहालय द्वारा एक हिंदी लेखक कोश का निर्माण भी किया जाना चाहिए।